



Aishwarya

26 Dec 1998

10:32 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119210901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 26/12/1998
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 10:32:00 घंटे
इष्ट _____: 08:19:49 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 10:10:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:25 घंटे
साम्पातिक काल _____: 16:28:52 घंटे
सूर्योदय _____: 07:12:04 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:31:14 घंटे
दिनमान _____: 10:19:10 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 10:21:59 धनु
लग्न के अंश _____: 04:31:15 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: वरियान
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: थ-थाकोरी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1920	पौष	5
पंजाबी	संवत : 2055	पौष	12
बंगाली	सन् : 1405	पौष	10
तमिल	संवत : 2055	मार्गशी	11
केरल	कोल्लम : 1174	धनु	11
नेपाली	संवत : 2055	पौष	11
चैत्रादि	संवत : 2055	पौष	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2055	पौष	शुक्ल 8

पंचांग

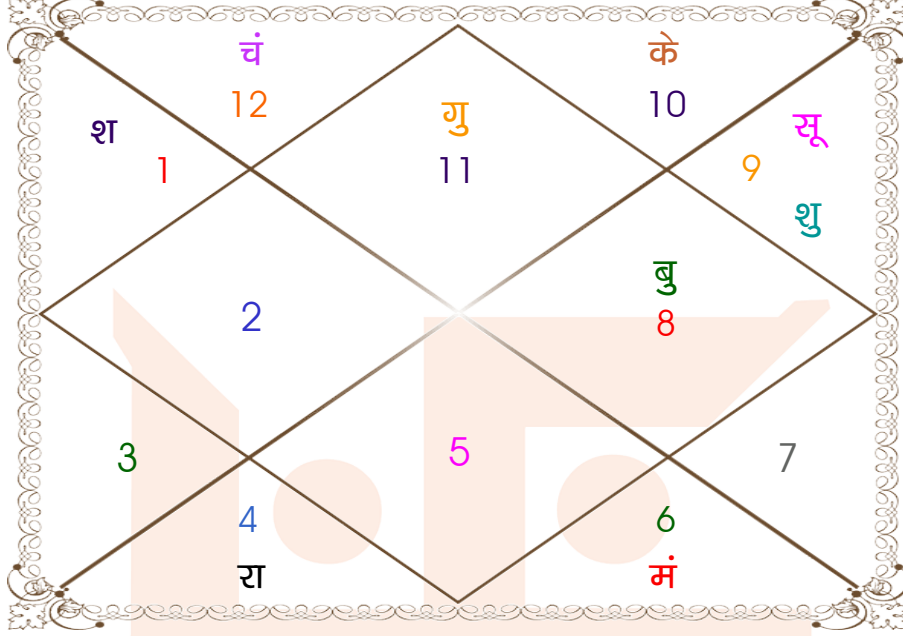
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
 तिथि समाप्ति काल _____ : 27:23:15
 जन्म तिथि _____ : 8
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 26:40:38 घंटे
 जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
 सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
 योग समाप्ति काल _____ : 08:55:17 घंटे
 जन्म योग _____ : वरियान
 सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
 करण समाप्ति काल _____ : 16:16:00 घंटे
 जन्म करण _____ : विष्टि
 भयात _____ : 17:14:48
 भभोग _____ : 57:36:24
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 13 वर्ष 4 मा 6 दि

घात चक्र

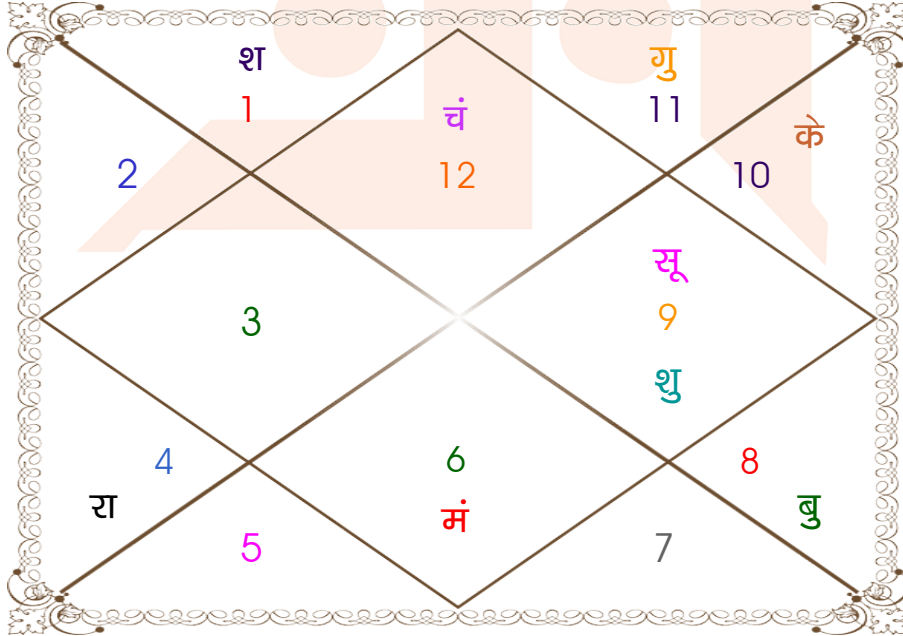
मास _____ : फाल्गुन
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : आश्लेषा
 योग _____ : वज्र
 करण _____ : चतुष्पाद
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : सिंह
 सूर्य _____ : मिथुन
 चन्द्र _____ : कुम्भ
 मंगल _____ : कर्क
 बुध _____ : कुम्भ
 गुरु _____ : सिंह
 शुक्र _____ : कन्या
 शनि _____ : वृष
 राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

चं	श		
गु ल			रा
के			
शु सू	बु		मं

लग्न कुंडली

	श	चं	गु ल
रा			के
			सू शु
मं		बु	

विंशोत्तरी
शनि 13वर्ष 4मा 6दि
शनि

26/12/1998

04/05/2113

शनि	03/05/2012
बुध	03/05/2029
केतु	03/05/2036
शुक्र	03/05/2056
सूर्य	03/05/2062
चन्द्र	03/05/2072
मंगल	03/05/2079
राहु	03/05/2097
गुरु	04/05/2113

योगिनी
भद्रिका 3वर्ष 6मा 4दि
पिंगला

01/07/2024

01/07/2026

पिंगला	10/08/2024
धान्या	10/10/2024
भामरी	30/12/2024
भद्रिका	11/04/2025
उल्का	11/08/2025
सिद्धा	31/12/2025
संकटा	11/06/2026
मंगला	01/07/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

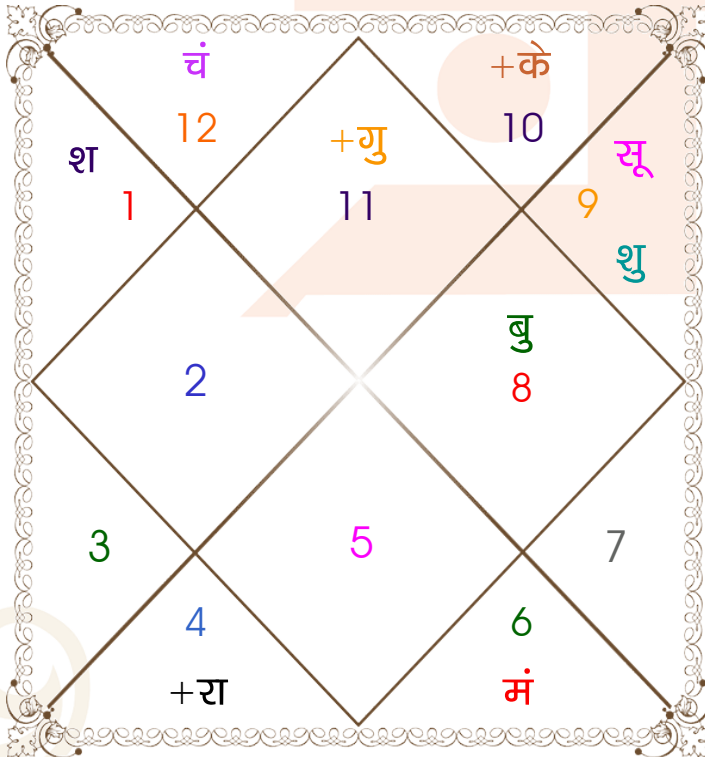
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	04:31:15	475:27:56	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
सूर्य			धनु	10:21:59	01:01:08	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
चंद्र			मीन	07:17:50	13:49:54	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
मंगल			कन्या	21:38:03	00:30:33	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
बुध			वृश्चि	19:40:06	01:16:21	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	शुक्र	सम राशि
गुरु			कुंभ	27:17:33	00:07:57	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
शुक्र			धनु	24:16:53	01:15:16	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	सम राशि
शनि	व		मेष	02:56:20	00:00:23	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	नीच राशि
राहु			कर्क	29:27:16	00:00:25	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
केतु			मक	29:27:16	00:00:25	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			मक	16:49:22	00:02:59	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	---
नेप			मक	07:00:51	00:02:05	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
प्लूटो			वृश्चि	15:04:06	00:02:10	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
दशम भाव			वृश्चि	15:05:05	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	गुरु	--

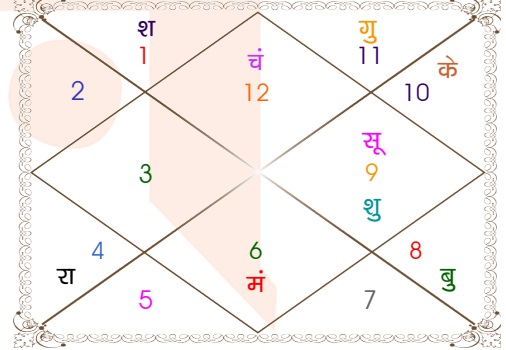
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:24

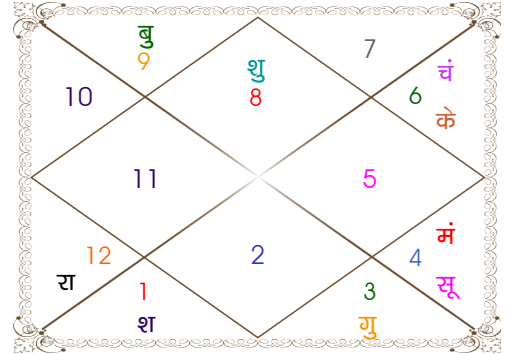
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 21:16:53	कुम्भ 04:31:15
2	कुम्भ 21:16:53	मीन 08:02:32
3	मीन 24:48:10	मेष 11:33:48
4	मेष 28:19:27	वृष 15:05:05
5	वृष 28:19:27	मिथुन 11:33:48
6	मिथुन 24:48:10	कर्क 08:02:32
7	कर्क 21:16:53	सिंह 04:31:15
8	सिंह 21:16:53	कन्या 08:02:32
9	कन्या 24:48:10	तुला 11:33:48
10	तुला 28:19:27	वृश्चिक 15:05:05
11	वृश्चिक 28:19:27	धनु 11:33:48
12	धनु 24:48:10	मकर 08:02:32

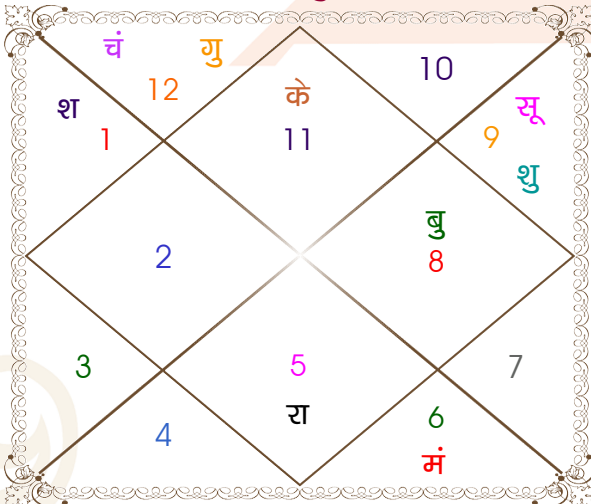
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ 04:31:15	
2	मीन 15:28:51	
3	मेष 18:45:05	
4	वृष 15:05:05	
5	मिथुन 08:35:38	
6	कर्क 03:22:04	
7	सिंह 04:31:15	
8	कन्या 15:28:51	
9	तुला 18:45:05	
10	वृश्चिक 15:05:05	
11	धनु 08:35:38	
12	मकर 03:22:04	

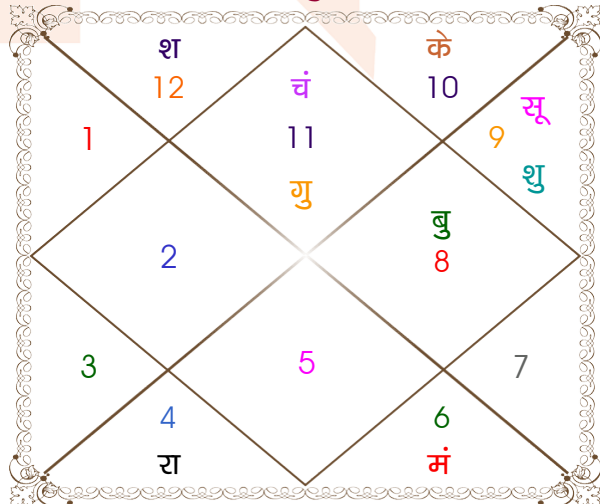
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 13 वर्ष 4 मास 6 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
26/12/1998	03/05/2012	03/05/2029	03/05/2036	03/05/2056
03/05/2012	03/05/2029	03/05/2036	03/05/2056	03/05/2062
26/12/1998	बुध 29/09/2014	केतु 29/09/2029	शुक्र 02/09/2039	सूर्य 20/08/2056
बुध 14/01/1999	केतु 26/09/2015	शुक्र 29/11/2030	सूर्य 01/09/2040	चंद्र 19/02/2057
केतु 23/02/2000	शुक्र 27/07/2018	सूर्य 06/04/2031	चंद्र 03/05/2042	मंगल 27/06/2057
शुक्र 24/04/2003	सूर्य 03/06/2019	चंद्र 05/11/2031	मंगल 03/07/2043	राहु 21/05/2058
सूर्य 05/04/2004	चंद्र 01/11/2020	मंगल 02/04/2032	राहु 03/07/2046	गुरु 09/03/2059
चंद्र 04/11/2005	मंगल 29/10/2021	राहु 21/04/2033	गुरु 03/03/2049	शनि 19/02/2060
मंगल 14/12/2006	राहु 18/05/2024	गुरु 28/03/2034	शनि 03/05/2052	बुध 26/12/2060
राहु 20/10/2009	गुरु 24/08/2026	शनि 06/05/2035	बुध 03/03/2055	केतु 03/05/2061
गुरु 03/05/2012	शनि 03/05/2029	बुध 03/05/2036	केतु 03/05/2056	शुक्र 03/05/2062

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
03/05/2062	03/05/2072	03/05/2079	03/05/2097	04/05/2113
03/05/2072	03/05/2079	03/05/2097	04/05/2113	00/00/0000
चंद्र 03/03/2063	मंगल 29/09/2072	राहु 13/01/2082	गुरु 21/06/2099	शनि 07/05/2116
मंगल 02/10/2063	राहु 17/10/2073	गुरु 08/06/2084	शनि 02/01/2102	बुध 27/12/2118
राहु 02/04/2065	गुरु 23/09/2074	शनि 15/04/2087	बुध 09/04/2104	00/00/0000
गुरु 02/08/2066	शनि 02/11/2075	बुध 01/11/2089	केतु 16/03/2105	00/00/0000
शनि 03/03/2068	बुध 29/10/2076	केतु 20/11/2090	शुक्र 15/11/2107	00/00/0000
बुध 02/08/2069	केतु 27/03/2077	शुक्र 20/11/2093	सूर्य 02/09/2108	00/00/0000
केतु 03/03/2070	शुक्र 27/05/2078	सूर्य 14/10/2094	चंद्र 02/01/2110	00/00/0000
शुक्र 02/11/2071	सूर्य 02/10/2078	चंद्र 14/04/2096	मंगल 09/12/2110	00/00/0000
सूर्य 03/05/2072	चंद्र 03/05/2079	मंगल 03/05/2097	राहु 04/05/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 13 वर्ष 3 मा 22 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 18/05/2024 24/08/2026	बुध - शनि 24/08/2026 03/05/2029	केतु - केतु 03/05/2029 29/09/2029	केतु - शुक्र 29/09/2029 29/11/2030	केतु - सूर्य 29/11/2030 06/04/2031
गुरु 05/09/2024 शनि 14/01/2025 बुध 12/05/2025 केतु 29/06/2025 शुक्र 14/11/2025 सूर्य 25/12/2025 चंद्र 04/03/2026 मंगल 21/04/2026 राहु 24/08/2026	शनि 26/01/2027 बुध 15/06/2027 केतु 11/08/2027 शुक्र 22/01/2028 सूर्य 11/03/2028 चंद्र 01/06/2028 मंगल 28/07/2028 राहु 23/12/2028 गुरु 03/05/2029	केतु 11/05/2029 शुक्र 05/06/2029 सूर्य 13/06/2029 चंद्र 25/06/2029 मंगल 04/07/2029 राहु 26/07/2029 गुरु 15/08/2029 शनि 08/09/2029 बुध 29/09/2029	शुक्र 09/12/2029 सूर्य 30/12/2029 चंद्र 04/02/2030 मंगल 01/03/2030 राहु 04/05/2030 गुरु 29/06/2030 शनि 05/09/2030 बुध 04/11/2030 केतु 29/11/2030	सूर्य 05/12/2030 चंद्र 16/12/2030 मंगल 24/12/2030 राहु 12/01/2031 गुरु 29/01/2031 शनि 18/02/2031 बुध 08/03/2031 केतु 16/03/2031 शुक्र 06/04/2031
केतु - चंद्र 06/04/2031 05/11/2031	केतु - मंगल 05/11/2031 02/04/2032	केतु - राहु 02/04/2032 21/04/2033	केतु - गुरु 21/04/2033 28/03/2034	केतु - शनि 28/03/2034 06/05/2035
चंद्र 24/04/2031 मंगल 06/05/2031 राहु 07/06/2031 गुरु 05/07/2031 शनि 08/08/2031 बुध 07/09/2031 केतु 20/09/2031 शुक्र 25/10/2031 सूर्य 05/11/2031	मंगल 14/11/2031 राहु 06/12/2031 गुरु 26/12/2031 शनि 19/01/2032 बुध 09/02/2032 केतु 17/02/2032 शुक्र 13/03/2032 सूर्य 21/03/2032 चंद्र 02/04/2032	राहु 30/05/2032 गुरु 20/07/2032 शनि 18/09/2032 बुध 12/11/2032 केतु 04/12/2032 शुक्र 06/02/2033 सूर्य 25/02/2033 चंद्र 29/03/2033 मंगल 21/04/2033	गुरु 05/06/2033 शनि 29/07/2033 बुध 15/09/2033 केतु 05/10/2033 शुक्र 01/12/2033 सूर्य 18/12/2033 चंद्र 15/01/2034 मंगल 04/02/2034 राहु 28/03/2034	शनि 31/05/2034 बुध 27/07/2034 केतु 20/08/2034 शुक्र 26/10/2034 सूर्य 15/11/2034 चंद्र 19/12/2034 मंगल 12/01/2035 राहु 13/03/2035 गुरु 06/05/2035
केतु - बुध 06/05/2035 03/05/2036	शुक्र - शुक्र 03/05/2036 02/09/2039	शुक्र - सूर्य 02/09/2039 01/09/2040	शुक्र - चंद्र 01/09/2040 03/05/2042	शुक्र - मंगल 03/05/2042 03/07/2043
बुध 27/06/2035 केतु 18/07/2035 शुक्र 16/09/2035 सूर्य 04/10/2035 चंद्र 03/11/2035 मंगल 25/11/2035 राहु 18/01/2036 गुरु 06/03/2036 शनि 03/05/2036	शुक्र 21/11/2036 सूर्य 21/01/2037 चंद्र 03/05/2037 मंगल 13/07/2037 राहु 11/01/2038 गुरु 23/06/2038 शनि 02/01/2039 बुध 23/06/2039 केतु 02/09/2039	सूर्य 20/09/2039 चंद्र 21/10/2039 मंगल 11/11/2039 राहु 05/01/2040 गुरु 23/02/2040 शनि 20/04/2040 बुध 11/06/2040 केतु 02/07/2040 शुक्र 01/09/2040	चंद्र 22/10/2040 मंगल 27/11/2040 राहु 26/02/2041 गुरु 18/05/2041 शनि 22/08/2041 बुध 17/11/2041 केतु 22/12/2041 शुक्र 03/04/2042 सूर्य 03/05/2042	मंगल 28/05/2042 राहु 31/07/2042 गुरु 26/09/2042 शनि 02/12/2042 बुध 31/01/2043 केतु 25/02/2043 शुक्र 07/05/2043 सूर्य 29/05/2043 चंद्र 03/07/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

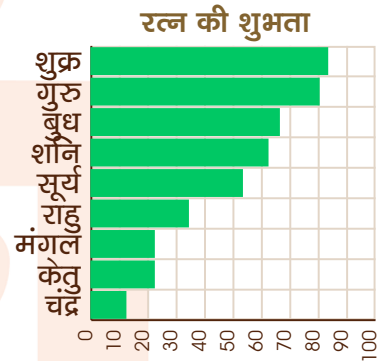


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	83%	धनार्जन, सुख, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	80%	स्वास्थ्य, धनार्जन, धन
पन्ना	बुध	66%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
नीलम	शनि	62%	पराक्रम, कम खर्च, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	53%	धनार्जन, दम्पति
गोमेद	राहु	34%	शत्रु व रोग, धन हानि
मूंगा	मंगल	22%	दुर्घटना, पराक्रम हानि, व्यावसायिक हानि
लहसुनिया	केतु	22%	व्यय, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	12%	धन हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	03/05/2012	31%	0%	0%	72%	80%	89%	75%	47%	0%
बुध	03/05/2029	59%	0%	22%	78%	80%	89%	62%	34%	22%
केतु	03/05/2036	31%	0%	34%	66%	80%	89%	50%	9%	47%
शुक्र	03/05/2056	31%	0%	22%	72%	80%	95%	69%	47%	34%
सूर्य	03/05/2062	66%	25%	34%	66%	86%	70%	50%	9%	0%
चंद्र	03/05/2072	59%	38%	22%	72%	80%	83%	62%	9%	0%
मंगल	03/05/2079	59%	25%	47%	53%	86%	83%	62%	9%	34%
राहु	03/05/2097	31%	0%	0%	66%	80%	89%	69%	55%	0%
गुरु	04/05/2113	59%	25%	34%	53%	92%	70%	62%	34%	22%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/12/1998-07/06/2000	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

सम
शुभ
शुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

पराक्रम हानि
सन्तति
भाग्योदय
स्वास्थ्य
धन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे

मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गगत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य अध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराकमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूल-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराकमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(03/05/2012 - 03/05/2029)**

बुध की महादशा 03/05/2012 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 03/05/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियों के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(18/05/2024 - 24/08/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 03/05/2012 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 18/05/2024 को प्रारंभ होकर 24/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न, सफल और धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। संतानसुख रहेगा। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में उन्नति हो सकती है। विवाह हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है। व्यापार में लाभ और विस्तार की संभावना है। धनी बनेंगे। यात्रा हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, कार्यक्षमता उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी को कार्यों और व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी होंगे; पारिवारिक सुख मिलेगा। माता सफल और प्रसिद्ध होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन का संचय, प्रभावशाली मित्र, यात्रा, सौभाग्य और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है। आपकी संतान सौभाग्यशाली होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो पिता से सकारात्मक संबंध होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को वर्तमान में किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों के धनार्जन में वृद्धि होगी; यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(24/08/2026 - 03/05/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 03/05/2012 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 24/08/2026 को प्रारंभ होकर 03/05/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। सभी कार्य सुचारु रूप से दक्षता से करेंगे। लेखन, विज्ञान और संचार माध्यम से संबंधित कार्यों में लिए समय शुभ है। स्पर्धियों पर विजय होगी। पंचम भाव पर शनि की दृष्टि के कारण शिक्षा उत्तम होगी, प्रोन्नति होगी, उच्चपद मिलेगा, धनागम होगा, समृद्ध बनेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है; संतान सुखकारी होगी।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध होंगे, धनार्जन उत्तम होगा, यात्रा होगी, समाज में सफलता मिलेगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, धनागम होगा, समृद्ध बनेंगे। माता

महादशा :- केतु
(03/05/2029 - 03/05/2036)

केतु की महादशा 03/05/2029 को आरम्भ और 03/05/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि छठे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको आराम, साझेदारों से लाभ, विवाह और यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको धन समृद्धि की प्राप्ति, उच्च शिक्षा तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की राशि में स्थित केतु के कारण गठिया, मासपेशियों में दर्द और वायु से संबंधित रोग हो सकते हैं। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, बुखार, संक्रामक बीमारी, आँख में पीड़ा, चर्मरोग और निचले भागों में कष्ट हो सकता है। कुछ उपाय कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आय से अधिक व्यय होगा। जहाँ तक संभव हो सहे से बचें। आप अपने प्रयास से धन संग्रह करेंगे। धन के आयोजन में सावधानी की जरूरत है। जीविका और व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर, गुप्त-विद्या, नर्सिंग, रेडियोग्राफी, न्यूरोलॉजी आदि का चयन सकते हैं। डाक्टरी उपकरण, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लिफ्ट, द्रव-इंजीनियरी, टेलीफोन, दवा आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को बाहरी स्रोतों से लाभ होगा, साझेदारी तथा वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के कारोबार में कुछ परिवर्तन होगा और सहकर्मियों तथा अधीनस्थों से सहायता मिलेगी। आपका विदेशी स्रोतों से कारोबार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आराम मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि किन्तु, सम्पत्ति के लेन-देन में सावधानी की जरूरत है। इस दशा में विदेश यात्रा की

सम्भावना है जो लाभदायक सिद्ध होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आप अपने अध्ययन का मार्ग या संस्था बदल सकते हैं। अपने स्तर को बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा विमान इंजीनियरिंग, तत्त्व-मीमांसा या गुप्त विद्या, रेडियोग्राफी दवा से संबंधित विषय आदि में आपकी रुचि हो सकती है। बौद्धिक क्षमता के सभी विषयों पर आधिपत्य होगा।

परिवार :

परिवार के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्गदर्शन, की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है, शत्रुओं के कारण परेशानी और कार्यस्थान में परिस्थिति प्रतिकूल हो सकती है। आपकी माता को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि और प्रगति होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी और जीवन में प्रगति होगी जबकि बड़ों को लाभ और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, परिवर्तन और आध्यात्मिक कार्य में रुचि होगी। शुक्र के कारण छोटी यात्रा, कुछ बाधा, अचानक लाभ और हानि तथा स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य के कारण विरोधियों पर विजय और कुछ बाधा हो सकती है। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा, परिवार में शिशु का जन्म होगा और धन तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्याति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा, लाभ और व्यय होगा। बुध की अन्तर्दशा में आराम मिलेगा, विवाह और यात्रा होगी तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- केतु - केतु
(03/05/2029 - 29/09/2029)**

आपके लिए केतु महादशा 03/05/2029 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/05/2029 को प्रारंभ होकर 29/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे मगर वे शुभकार्यों पर होंगे। कभी-कभी मन चिंचित रह सकता है, मगर जल्द ही प्रसन्नचित्त हो जाएंगे। संकल्पशक्ति उत्तम होगी; लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। कार्यालय का वातावरण हर्षमय रहेगा; सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; इच्छाशक्ति प्रबल होगी।

आपके जीवनसाथी को स्पर्धियों और विरोधियों पर सफलता प्राप्त होगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, लोकप्रियता, प्रसन्नता, प्रसिद्धि, धनार्जन और सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ अवांछित परिवर्तन आ सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक धनागम हो सकता है, पैतृक संपत्ति से लाभ संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी लाभकारी होंगे, कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी, कार्यालय में हर्षमय वातावरण रहेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को हनुमानजी की उपासना करें और बेसन के लड्डुओं से भोग लगाएं।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(29/09/2029 - 29/11/2030)**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनागम अच्छा होगा। धन संचित होगा, अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके बहुत से ज्ञानवान और प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। कला में रुचि होगी। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्चपद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली होंगे। आपके पिता को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी; वे धनी बनेंगे, लघु यात्राएं होंगी। माता विरासत द्वारा अचल संपत्ति की

मालिक बन सकती हैं; धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से लाभकारी संबंध, धन-समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। बड़े भाई-बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध और धनी बनेंगे।

आपकी संतान सफल रहेगी, उत्तम मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, किस्मत साथ देगी, धनार्जन अच्छा होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को विविध माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः



FUTUREPOINT
Astro Solutions

